प्राक्कथन

प्राक्कथन :

फणीश्वरनाथ " रेणु " आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य में एक सफल और अद्वितिय आंचलिक साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित हुए है। आधुनिक काल में साहित्य की विविध विधाओं का विकास हुआ। इसी तरह कहानी का प्रवाह भी अबाध गति से बहता रहा। उसमें आंचलिकता के कारण जीवन की वास्तविकता का प्रतिबिंब दृष्टिगोचर होने लगा। " रेणु " का रचना संसार, एक ईमानदार लेखक की सहज अभिव्यक्ति है। कथाकार के रूप में " रेणु " जी आंचलिक कहानी के सशक्त हस्ताक्षर माने जा सकते है।

फणीश्वरनाथ " रेणु " को पढने का मौका एम. फि. की पढाई के दौरान आया था। उनका प्रसिध्द कहानी संग्रह " ठमरी " पढकर मै उनकी ओर आकर्षित हो गया और कुछ ही दिनों में उनका पूरा कहानी साहित्य पढ लिया। परिणामत: मेरे मन में " रेणु " की कहानियों पर शोध - कार्य करने की इच्छा जागृत हुयी और मैने एम. फिल. के लघुशोध प्रबंध के लिए " रेणु " की कहानियों में आंचलिकता" शीर्षक के अंतर्गत कार्य करना निश्चित किया।

" रेणु " मनुष्य जीवन के सफल चित्रकार है। जीवन के घात-प्रतिघातों से जूझते हुए उन्होंने समाज के व्यापक धरातल को अतिशय बारीकी से देखा है, परखा है। इस प्रयास में सामाजिक, धार्मिक आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक धरातल पर उन्होंने आंचलिक कहानी को चित्रित किया है। अंचल समाज और देश का एक प्रमुख अंग होते हुए भी वास्तव में वह उपेक्षित, निस्तेज एवं सत्वहीन हो गया है।"रेणु" ने आंचलिक जीवन के उन तमाम पहलूओं पर प्रकाश डालने की चेष्टा कि है जिसके कारण वह अपनी स्वतंत्र विशेषता रखता है। आंचलिक जीवन के गुण - दोषों को अपनी वास्तविकता के साथ चित्रित किया है।

प्रस्तुत प्रबंध " फणीश्वरनाथ " रेणु " की कहानियों में आंचलिकता " में "रेणु" की कहानियों का अनुशीलन आंचलिकता के संदर्भ में किया गया है।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध छः अध्यायों में विभाजित है।

प्रस्तुत प्रबंध के प्रथम अध्याय में फणीश्वरनाथ " रेणु " के व्यक्तित्व एवं कृतित्वपर संक्षेप में विचार किया गया है। उनका जन्म, शिक्षा, पारिवारीक जीवन, प्रेम, विवाह , राजनीतिक चढउतार, साहित्य सेवा, क्रांतिकारी जीवन और साहित्य साधना के दौर का उल्लेख करते हुए उनकी विविधयामी साहित्य रचना पर प्रकाश डाला है। उनका पूरा साहित्य जीवन से जुडा हुआ है जो पाठकों के साथ अपनत्व स्थापित करता है।

द्वितीय अध्याय में हिन्दी आंचलिक कहानी का स्वरूप, प्रकृति एवं परिभाषा पर विस्तार के साथ विचार किया गया है। हिन्दी साहित्य में आधुनिक युग सबसे अधिक विवेच्य युग रहा है। क्योंकि इसके अंतर्गत स्वातंत्र्योत्तर काल में जीवन से संबंधित अनेक वाद - विवाद, मत - मतांतर तथा विचारधारा का प्रादुर्भाव हुआ। इसी समय आंचलिक साहित्य का जोरों के साथ प्रचलन हुआ। इस आंचलिकता की इस अध्याय में सैद्धांतिक परिभाषा, स्वरूप, व्याप्ति, तत्व-स्तर पर स्पष्ट करने की कोशिश की है।

तृतीय अध्याय में हिन्दी कहानी के इतिहास को बहुतही संक्षेप में प्रस्तुत किया है। हिन्दी कहानी के काल - विभाजन के आधारपर यह इतिहास स्पष्ट हुआ है। आंचलिकताने हिन्दी कहानी में एक नया प्रवाह लाया। इस आंचलिकता के कुछ लक्षण प्रेमचंद की कहानियों में दिखायी देते है, परंतु सही माने में " मैला आंचल " के प्रकाशन के बाद ही आंचलिक कथा साहित्यका प्रचलन हिंदी साहित्य में हुआ। फणीश्वरनाथ " रेणु " के साथ - साथ कुछ प्रमुख आंचलिक कहानीकारों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

चतुर्थ अध्याय में फणीश्वरनाथ " रेणु " की कहानियों में चित्रित सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक जीवन की झांकी प्रस्तुत की है। रेणु की कहानियां आंचल से जूडी हुयी है न कि किसी वाद

या संप्रदाय से । इसी कारण उनकी कहानियों का समाज शास्त्रिय विश्लेषण आंचलिकता के संदर्भ में ही किया गया है । इन सब का विस्तृत विवेचन इस अध्याय में विस्तार के साथ किया गया है ।

पंचम अध्याय में " रेणु " की आंचलिक कहानियों की विशेषताओं पर अलग से विचार किया गया है । हिन्दी साहित्य में " रेणु " का अपना स्वतंत्र स्थान है और उनके कारण ही हिन्दी आंचलिक कहानी अपनी स्वतंत्र विशेषता कायम कर सकी । संक्षेप में इस पर विचार किया गया है ।

छठा और अंतिम अध्याय उपसंहार का है । "फणीश्वरनाथ " "रेणु" की कहानियों में आंचलिकता " इस विषय पर अनुशीलन करने के बाद जो ि निष्कर्ष हाथ लगे उन्हें उपसंहार के इस छठे अध्याय में सार के रूप में रखा है । एक सफल तथा लोकप्रिय कहानी लेखक की हैसियत से " रेणु " की जो विशेषताएं दृष्टिगोचर होती है उनका संकेत दिया गया है ।

इस शोध - प्रबंध के अंत में सहायूयक संदर्भ ग्रंथों की सूची जोड दी गयी है, जो मुझे इस शोधकार्य के सिलसिले में विशेष सहायूयक सिध्द हुयी । प्रस्तुत शोध - प्रबन्ध डॉ. के. पी. शहा जी. के. कृपापूर्ण निर्देशन में लिखा गया है । यह बात मेरे लिए विशेष गौरव की है । अपनी व्यस्तताओं के बावजूद भी सतत प्रेरणा और प्रात्साहन देकर आपने मेरी सहायता की है । इस कार्य के संबंध में आयी हर कठिनाई में आपने मेरा साथ दिया । आपके इस स्नेह प्रेरणा और आशीर्वाद का मैं सदैव ऋणी रहूँगा ।

हमारे महाविद्यालय के प्राचार्य बी. एस. अक्की ग्रंथपाल श्री. वाली कोरेगांव तालुका- मास्टर श्री. मारुती कुरणे एवं अन्य सभी कर्मचारियों का

मुझे सामग्री उपलब्ध करा देने में बडा हाथ रहा है। देवचंद कालिज के हिन्दी-विभागाध्यक्ष प्रा. प्रकाश शहा, मेरे सहपाठी मित्र मारूफ मुजावर, टंकलेखनकार चव्हाण दांपत्य की सहायूयतासे ही यह कार्य पूरा हो चुका है, अत: मै उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। मेरी धर्मपत्नी सौ. कांचन, ने अपने गृहकाज से अधिकाधिक समय इस शोध-प्रबन्ध की सहायता में दिया है। इसलिए सभी के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ। भविष्य में भी इन सभी लोगोंसे आशीर्वाद तथा सहयोग की कामना रखते हुए मैं अपना यह लघु-शोध-प्रबंन्ध अवलोकन के लिए समीक्षकों के सामने प्रस्तुत करता हूँ।

कोल्हापुर

दिनांक : 30/5/1990.

आपका कृपाभिलाषी,

(प्रा. एस. एच्. कांबळे)